खरीफ प्याज की खेती

महत्वपूर्ण किस्में

एग्रीफाउण्ड डार्क रेड: खरीफ मौसम में उगाने के लिये यह सर्वोत्तम किस्म है। इ किस्म के प्याज गहरे लाल रंग के 4-5 सेमी व्यास के होते है तथा स्वाद में मध्यम तीखे होते है। रोपाई के बाद यह किस्म 75 से 90 दिनों में तैयार होती है। इसकी औसत उपज 120 या 160 कुन्टल प्रति एकड़ प्राप्त होती है।

अर्का कल्याण

इस फिल्म के प्याज गोलाकार तथा गहरे लाल रंग के होते है। कन्द स्वाद में तीखे होते है एंव कन्दों का व्याज 4-6 सेमी तक होता है। यह किस्म रोपाई के बाद 100 से 110 में तैयार हो जाती है।

अर्का निकेतन

इस किस्म के शल्क कन्द गोल आकर्षक गुलाबी रंग के तथा पतली गर्दन वाले होते है। वह भण्डारण के लिए उत्तम किस्म है। साधारण तापमान 5 से 6 महीने तक भण्डारित किए जा सकते हैं। यह किस्म रोपाई के 110 से 120 दिनों में तैयार हो जाती है तथा प्रति एकड़ 120×160 क्विंटल उत्पादन देती है।

एग्रीफाउण्ड रोज

यह किस्म निर्यात के लिये उत्तम है। इसके शल्क कन्द गोलाकार चपटे तथा गहरे लाल रंग के होते है। जिसका व्यास 2.3 से संमी. 3.5 होता है। वह किस्म 85 से 110 दिनों में तैयार होती है तथा 75 से 80 कुन्टल तक प्रति एकड़ उत्पादन देती है।

उत्पादन तकनीक

खरीफ प्याज की सफल खेती वातावरण एंव जलवायुए भूमि के प्रकार एंव उर्वराशक्ति उचित प्रजाति का चयन समायिक बुवाई संतुलित खद एंव उर्वरक जल प्रबंधन खरपतवार नियंत्रण एंव पाल संरक्षण उपायों पर निर्भर करती है। अतः खरीफ मौसम में प्याज का अच्छा उत्पादन लेने के लिय इनका ज्ञान होना अति आवश्यक है।

वतावरण एंव जलवायु

जिले का वातावरण एंव जलवायु खरीफ प्याज की खेती के लिए उपसुक्त पाया गया है। खरीफ मौसम में प्याज की खती के लिए 10-11 घंटे की प्रकाश अवधि का होना आवश्यक समझा जाता है। वानस्पतिक वृद्धि के लिए उचित तापक्रत की भी आवश्यकता होती है। सामान्यतः अच्छी खेती के लिए 13-24 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान शल्क कन्द बनने से पूर्व तथा लगभग 20-25 डिग्रीसेन्टीग्रेड तापमान शल्क कन्दों विकास उपयुक्त होता है। शल्क कन्दों के विकास के समय वर्षा होने पर झुलसा रोग तथा बैंगनी धब्बा रोग अधिक आता है। जबकि कम तापमान होने पर पुष्पदण्ड बोल्टर यानि प्याज फूलने की समस्या अधिक होती है। अधिक तापतान होने पर पैदावार कम हो जाती है।

खरीफ प्याज की अच्छी फसल हेतु भूमि का चुनाव

खरीफ प्याज की सफल खेती के लिए हल्की मिट्टी दोतट वाला खेत लिसमें बरसाजी पानी न ठहरता हो का चुनाव करना चाहिए। खरीफ प्याज की खेती के लिए भारी जमीन का चुनाव नहीं करना चाहिए ऐसी जमीन में प्याल की गांठों का विकास ठीक तरह से नहीं हो पाता एंव प्याज की गाठें सड़ने लगती है।

नर्सरी तैयार करना

बरसाती प्याज की नर्सरी तैयार करने के लिए ऐसे स्थल का चुनाव करना चाहिए जो थोड़ा ऊंचा हो तथा जहां पानी एकत्र न हो। चयनित स्थल की मिट्टी बलुई दोतट होनी चाहिए। नर्सरी डालने के लिए कदापि छायादार स्थान का चुनाव नहीं करना चाहिए । नर्सरी स्थल को पशुओं एंव अन्य जानवरों से सुरक्षा के लिए बाड़ लगाकर सुक्षित करना चाहिए ।नर्सरी डालने के लिए क्यारियों को बनाने की तैयारी मई के महीने से शुरू करदेना चाहिए। इस महीने चयनित लगह की गहार जुताई करके 15-20 दिनों के लिए छोड़ देना चाहिए ऐसा करने से खेत में उपस्थित हानिकारक कीटाणु एंव रोगाणु नष्ट हो जाते है। जून में मिट्टी के ढेलों को तोड़कर बारीक कर लेते है तथा 2-3 जुताइयां करके स्थल को समतल बनाकर 60 सेमी. चौड़ी 75 मी. लम्बी एंव जमीन से 15-20 सेमी. ऊंची उठी हुई क्यारियाफ बना ले ताकि बारिस के पानी का निकास अच्छी तरह से हो सके एंव निराई-गुड़ाई के कार्य आसानी से किया ला सके।

नर्सरी कब डालें

खरीफ प्याज की खती के लिए जून 15-25 तक नर्सरी डालने का कार्य करना चाहिए।

बीज की बुवाई

बुबाई से पहले क्यारियों में सड़ी गोबर की महीन खाद 10 किग्रा. प्रति क्यारी के हिसाब से अच्छी तरह से मिला दें। बुवाई के समय प्रत्येक क्यारी में 100 ग्रान डी.ए.पी. एंव 50 ग्राम पोटाश खाद भी मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें एंव क्यारी की मिट्टी की तह को समतल करें। क्यारी की मिट्टी को 40 ग्राम कैप्टान या बाइरग नामक रसायन से प्रति क्यारी की दर से उपचारित करके 5 सेमी की दूरी पर आड़ी लाइनों में बीज की बुवाई कर देते है। बुबाई से पूर्व बीज को कार्बेन्डेजिम नामक रसायन से 2 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित कर लें। बीज की बुबाई के पश्चात् बारीक छनी हुई सड़ी गोबर की खाद या राख की हल्की परत से बीजों को ढक देना चाहिए तथा तुरन्त हजारे की सहायता से पानी दे देना चाहिए। अच्छे अंकुरण के लिए क्यारियों को पलास की पत्तियों या पैरा या सूखी घास से ढक देना चाहिए । समय -समय पर हजारे से सिंचाई करें रहें तथा अंकुरण हो जाने पर 7-8 दिन बाद घास -फूस या पैरा को हटा देना चाहिए तथा सिंचाई हेतु नालियों में पानी भर देना चाहिए।

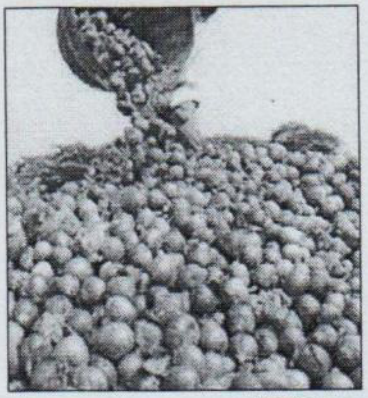

पौध को अधिक वर्षा से कैसे बचाएं

जुलाई में अधिक वर्षा होने के कारण क्यारियों में नमी अधिक होने से पौधों में गलन रोग हो जाता है। अतः नर्सरी करे गलने से बचाने के लिए क्यारियों के ऊपर पॉलीथीन की झोपड़ी बनानी चाहिए। इसके लिए क्यारियों के चारों किनारों पर 1.5 फीट ऊंचे चार बास तथा चैड़ाई वाले भाग के मध्य में 2 फीट ऊंचे दो बास लगाने चाहिए। इन बांस के खम्भों के ऊपर क्यारी की लम्बाई के साथ लम्बे तीन बांसों से अच्छी तरह बांध देनी चाहिए। इस प्रकार झोपड़ी का ढांचा तैयार होने पर ऊपर से 200 से 250 माइक्रोन की पारदर्शी प्लास्टिक फिल्म रस्सी से बांध देना चाहिए । इससे तैयार हो रही पौध को तेज वर्षा से बचाया जा सकता है।

बीज की मात्रा

एक एकड़ में पौध रोपण के लिए 4-5 किग्रा. बीज की आवश्यकता पड़ती है।

क्यारियों की संख्या

एक एकड़ खेत के लिए नर्सरी तैयार करने हेतु 7.5 मी. लम्बी 60 सेमी.चौड़ी एंव 15 सेमी. ऊंची आकार की 40 क्यारियों की आवश्यकता पड़ेगी।

नर्सरी में पौध की देखभाल

- अधिक वर्षा होने पर क्यारियों के ऊपर पॉलीथीन की झाड़ीनुमा संरचना बनायें।
- पौधों की बढ़वार के लिए समय-समय पर निराई-गुड़ाई करते रहें एंव क्यारियों की खरपतवार से मुक्त रखें।
- क्यारियों में बीज बुबाई के बाद आवश्यक नमी बनाये रखें इसके लिए समय-समय पर आवश्यकता अनुसार हजारे से सिंचाई करें।
- नर्सरी में वर्षा जल निकास हेतु व्यवस्था करें।
- पौधों की बीमारी से बचाने के लिए बुबाई के 10 दिन के अन्तराल पर मैकोजेब या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड दवा 25 ग्राम प्रति 10 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- पौध 6-7 सप्ताह में रोपाई हेतु तैयार हो जाती है।
- पौध रोपण से पूर्व पौध की जड़ों को कर्बेन्डेजिम दवा 2 ग्राम प्रति ली. पानी के घोल से उपचारित करें।

खेत की तैयारी खाद एवं उर्वरक

बरसाती प्याज का रोपण खेत में अगस्त में करना चाहिए चयनित खेत में जुताई से पूर्व 100 क्विंटल सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट अच्छी तरह से मिला देना चाहिए रोपाई हेतु खेत की अच्छी प्रकार 4-5 बार जुताई करके मिट्टी को भुरभुरी कर लेना चाहिए। खेत की अन्तिम जुताई के साथ 20 किग्रा फॉस्फोरस एंव 24 किग्रा. पोटाश उर्वरक प्रति एकड़ की दर से लि दे उक्त उर्वरकों की आपूर्ति हेतु 45 किग्रा. डी.ए.पी. एंव 40 किग्रा न्यूरेट ऑफ पोटाश खद डालें। नत्रजन उर्वरक 30 किग्रा हेतु रोपड के समय 45 किग्रा. यूरिया प्रति एकड़ की दर से दें। इसके बाद रेज्ड बेड प्लाटर या हाथ से 75 सेमी. 2.5 फीट चौड़ी एंव जमीन से 15 सेमी. उठी हुई क्यारियों के बीच 45 सेमी. चौड़ी नाली बनाएं। यदि खेत ढालवार हो तो क्यारियां ढाल के विपरीत दिशा में बननी चाहिए। इन क्यारियों में प्याज की पौध का रोपण 15 ग 10 सेमी. पर करें अर्थात कतार से कतार की दूरी 15 सेमी. तथा पौध की दूरी 10 सेमी. रखें।

रोपाई का समय

जब प्याज की पौध 6-7 सप्ताह की हो जाये तब रोपाई करनी चाहिए। सामान्यतः खरीफ प्याज की खेती के लिए प्याज की पौध का रोपण 10-15 अगस्त तक कर लेना चाहिए। जिससे प्याज की फसल मध्य नवम्बर तक तैयार हो जाये। वैसे पछेती खरीफ प्याज की खेती हेतु प्याज का शोषण 15 सितम्बर तक कर सकते है जो कि दिसम्बर अंत तक तैयार हो जाती है। रोपण के तुरन्त बाद सिंचाई अवश्य करें।

निराई-गुड़ाई एंव खरपतवार नियंत्रण

फसल की उचित बढ़वार एंव विकास के लिए 2-3 निराई-गुड़ाई अवश्य करें। खरीफ प्याज की फसल में खरपतवार एक बहुत बड़ी समस्या है, जिससे प्याज के उत्पादन में भारी कमी आती है। अतः खरपतवार नियंत्रण हेतु पेन्डीमेथोलिन नामक दवा 1.4 ली. प्रति 200 ली. पानी में प्रति एकड़ की दर से घोल बनाकर प्याज की पौध की रोपाई के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई देकर छिड़काव करें। प्याज में रोपाई के 35 दिन के बाद पहली निराई -गुड़ाई करें एंव दूसरी पहली गुड़ाई के 25-60 दिन बाद करें।

खड़ी फसल में उर्वरकों का छिड़काव

नत्रजन उर्वरक की शेष आधी मात्रा यूरिया खाद के रूप में दो बराबर भागों में रोपाई के 35 एंव 55 दिन बाद निराई गुड़ाई के पश्चात् दें। रोपाई के 60 दिन बाद उर्वरक देने से कन्द की गुणवत्ता प्रभावित होती है। फसल पर रोपाई के 40 से 50 दिन बाद एग्रोमिन सूक्ष्म तत्वों 2 ग्राम प्रति लीः पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

सिंचाई

प्याज की जड़े जमीन से गहराई तक जाती है। अतः अच्छी फसल के लिए खेत में नमी बनाए रखें। सिंचाई की मात्रा तथा संख्या मिट्टी की किस्म एंव वर्षा पर निर्भर करती है। सामान्यतः खरीफ प्याज में अगर निरन्तर पर बारिस हो रही है तो सिंचाई की आवश्यकता फसल की प्रारंभिक अवस्था में नहीं पड़ती, लेकिन यदि वर्षा नहीं हो तो 10-12 दिन के अन्तराल पर सिचाई करनी चाहिए खरीफ प्याज में टपक सिंचाई पद्धति उद्यान विभाग से सहयोग लेकर लगाई जा सकती है।

श्रोग एंव कीट प्रबंधन

यह प्याज की एक प्रमुख बीमारी है जिसमें पत्तियों पर गोलाकार धब्बे बनते है। धब्बो का मध्य भाग गहरे बैंगनी रंग का होता है जो रोग के बढ़ने के साथ काले रंग का होता है बाद में पत्तियां गिरने लगती हैं। रोग के नियंत्रण के लिए मैकोजेब दवा 2.5 ग्राम या कबोरोथैलोनिल 2 ग्राम प्रति ली. पानी की दर से घोल बनाकर 10 से 15 दिन के अंतराल पर 2-3 छिड़काव करें।

स्टेमफीलियम झुलसा

इस रोग में प्रारम्भ में पत्तियों पर पीली धारियाफ बनती हैं। बाद में पत्ती संक्रमित होकर सूख जाती है। रोग के नियंत्रण के लिए कार्बोन्डाजिम दवा 1 ग्राम प्रति ली. पानी की दर से घोल छिड़काव करें।

चौपा थ्रिप्स

खरीफ प्याज की फसल का विनाशकारी कीट है। कीट प्याज की पत्तियों में रस चूसते हैं, जिससे पत्तियों पर छोटे-छोटे अनियमित आकार के सफेद रंग के धब्बे बन जाते है। अधिक प्रकोप होने की दशा में पत्तियां मुड़ जाती हैं। कीट को रोकथाम के लिए इमीडाक्लोप्रिड नामक रसायन 5 मिली. दवा प्रति 15 ली पानी की दर से घोलकर छिड़काव 2-3 बार 15 दिन के अन्तराल पर करे।

प्याज की खुदाई

खरीफ प्याज की फसल रोपाई के बाद किस्मों की परिवक्वता के आधार पर 75 से 100 दिन में तैयार हो जाती है। किन्तु रबी प्याज की भाति खरीफ प्याज में पत्तियां सूखती नहीं है। पत्तियां हरी ही रहती है। अतः जब गाठे उचित आकार की हों जायें और गाठों का रंग चमकीला लगने लगे एंव कुछ पत्तियां पीली पड़ने लगे तो समझ लेना चाहिए कि प्याज की फसल तैयार है। खुदाई के लिए प्याज की पत्तियों समेत उखाड़कर 4-5 दिन के लिए खेत में छोड़ देते है। इससे पत्तियां सूख जाती उसके पश्चात पत्तियों की कटाई करनी चाहिए। फिर पुनः प्याज को 4-5 दिन के लिए छायादार स्थान में सुखाते हैं।

प्याज को सुखाना

प्याज की खुदाई के तुरंत बाद प्याज की पत्तियां समेत खेत में इस तरह से पक्तियों में रखें कि एक पंक्ति के प्याज के कन्द दूसरी पंक्ति के प्याज की पत्तियों से ढंक जाएं। इस प्रकार कंद सीधे धूप के सम्पर्क में नहीं आते हैं और उन्हें धूप से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है। प्याज को इस तरह खेत में तीन-चार दिन के लिए रखा जाता है। इस दौरान पत्तियों में विद्यमान रसायन कन्दों में आ जाते है। इसके पश्चात कन्दों के साथ-साथ सेमी. लम्बी डण्डी छोड़कर पत्तियों को काट दें लम्बी डण्डियों वाले प्याज जल्दी खराब नहीं होते है। प्याज की पत्तियां काटने के बाद उन्हें छाया में ढेरी बनाकर 2 सप्ताह तके सुखाना चाहिए। दस दौरान पत्तियों ढेरियों को 2-3 बार पलटना चाहिए। प्याज के छिलकों की नमी सूख जायें तथा प्याज की डण्डियों के मुंह सूखाना बंद हो जाये ऐसा करने से प्याज में काली फफूंदी तथा सड़न की समस्या कम हो जाती है।

प्याज की छटाई

प्याज को बाजार में बैचने से पूर्व आकार एंव रंग अनुसार छाट देते है। बहुत छोटी जुड़वा सड़ी एंव चोट लेगी गाठों को अलग छांट लेवें।

उपज: प्याज की उपज किस्म पर निर्भर कीरती है। सामान्यतः अगेती खरीफ प्याज से 70-80 क्विंटल प्रति एकड़ उपज प्राप्त होती है।

पैकिंग एंव विपणन

प्याज को 40 किग्रा क्षमता की जूट की बोरिया में प्याज के अनुसार श्रेणीकृत कर भरना चाहिए एवं उसके बाद मण्डी में भेजने की व्यवस्था करें।